HIN 3A17b-1 अन्धेर नगरी (Bhartendu)

पहला अंक

(स्थानः बाह्य प्रान्त – महन्तजी दो चेलों के साथ गाते हुए आते हैं)

सबः राम भजो राम भजो राम भजो भाई । राम के भजे से गनिका तर गयी । राम के भजे से गीध गति पाई । राम के नाम से काम बनै सब, । राम के भजन बिनु सबहि नसाई[1]। राम के नाम से दोनों नयन बिनु, । सूरदास भए कबिकुल-राई[2] । राम के नाम से घास जंगल की,। तुलसीदास भए भजि रघुराई।

महन्तः बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है! देख, कुछ भिच्छा-उच्छा मिले तो ठाकुरजी को भोग लगै। और क्या । (...) बच्चा गोबरधनदास, तू पच्छिम की ओर से जा और नारायणदास पूरब की ओर जायगा । देख, जो कुछ सीधा-सामग्री मिले तो श्री शालग्रामजी का बालभोग सिद्ध हो।

गोबरधनदासः गुरुजी, मैं बहुत सी भिच्छा लाता हूँ। यहाँ के लोग तो बड़े मालवर दिखाई पड़ते हैं । आप कुछ चिन्ता मत कीजिए ।

महन्तः बच्चा, बहुत लोभ मत करना। देखना, हाँ –

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान । लोभ कभी नहिं कीजिए, या मैं नरक निदान[3]

(गाते हुए सब जाते हैं)

दूसरा अंक

स्थानः बाज़ार

कबाबवालाः कबाब गरमागरम मसालेदार, चौरासी मसाला बहत्तर आँच का कबाब गरमागरम मसालेदार, खाय़ सो होंठ चाटै, न खाय सो जीभ काटै । कबाब लो, कबाब का ढेर – बेचा टके सेर ।

घासीरामः चने ज़ोर गरम ।

चने बनाने घासी राम । जिनकी झोली में दूकान ।।
चना चुरमुर चुरमुर बोलै । खन्न खाने को मुँह खोलै ।।
चना खानै नौकी, मैना । बोलै अच्छा बना चवैना ।।
चना खाये गफ़ूरन, मुन्नी[4]। बोलै और नहीं कुछ सुन्ना ।।
चना खाते सब बेंगाली । जिनकी धोती ढोली-ढाली ।।
चना खाते मियाँ जुलाहे । डाढ़ी हिलती गाह वगाहे ।।
चना हाकिम सब जो खाते । सब पर दूना टिकस लगाते ।।
चने ज़ोर गरम – टके सेर।

नरंगीवालीः नरंगी ले नरंगी—सिलहट[5] की नरंगी, बुटवल[6] की नरंगी । रामबाग की नरंगी, आनन्दबाग की नरंगी । भई नींबू से नरंगी । मैं तो पिय के रंग न रंगी । मैं तो भूली लेकर संगी । नरंगी ले नरंगी । कंवला नींबू, मीठा नींबू, रंगतरा, संतरा, नरंगी । दोनों हाथों लो – नहीं पीछे हाथ ही मलते रहोगे । नरंगी ले नरंगी, टके सेर नरंगी ।

हलवाईः जलेबियाँ गरमागरम । ले सेव इमरती लड्डू गुलाबजामुन खुरमा बुँदिया बरफ़ी समोसा पेड़ा कचौड़ी दालमोट पकौड़ी घेवर गुपचुप । हलुआ ले हलुआ मोहनभोग । मोयनदार कचौड़ी कचाका हलुआ लरम चभाका । घी में गरक, चीनी में तरातर, चासनी में चभाचभ । ले भूर का लड्डू ! जो खाय़ सो भी पछताय, जो न खाय सो भी पछताय । रेवड़ी कड़ाका । पापड़ कड़ाका । ऐसी जात हलवाई किसके छत्तीस कौम हैं भाई । जैसे कलकत्ते के विलसोन मंदिर के भितरिये, वैसे अंधेर नगरी के हम । सब सामान ताज़ा । खाजा ले खाजा । टके सेर खाजा ।

---

[1] नष्ट होना
[2] विभिन्न कवियों में श्रेष्ठ
[3] अन्त में
[4] काशी की तात्कालीन वेश्याएँ
[5] बाँगला की एक जगह
[6] नेपाल की एक जगह

कुंजड़िनः ले धनिया मेथी-सोआ पालक चौराई बथुआ करेसू चना सरसों नोनियाँ कुलफडा कसारी चना सरसें का साग। सरसा ले सरसा। ले बैंगन लौआ कोंहड़ा आलू अरुई बंडा नेनुआ सूरन रामतरोई मुरई। ले आदी मिरचा लहसून पियाज टिकोरा। ले फ़ालसा खिन्नी आम अमरूद निबुआ मटर होरहा। जैसे काजी वैसे पाजी। टके सेर भाजी ! ले हिन्दुस्तान का मेवा फूट और बैर[7]।

मुगलः बादाम पिस्ते अखरोट अनार बिहीदाना मुनक्का अमरूद किशमिश अंजीर आबजोश आलू बोखारा चिलगोजा सोब नाशपाती बिही सरदा खरबूजा, अंगूर का पीटारी। अमारा ऐसा मुल्क़ जिसमें अंगरेज़ का भी दांत कट्टा ओ गया। नाहक को रुपया ख़राब किया बेवकूफ़ बना। हिनदुस्तान का आदमी लक-लक[8] हमारे यहाँ का आदमी बुंबुक बुंबुक[9]। लो सब मेवा टके सेर।

पाचक वालाः चूरन अमलबेद का भारी। जिसको खाते कृष्ण मुरारी ।।
मेरा पाचक है पचलौना। जिसको खाता श्याम सलोना ।।
मेरा बना मसालेदार। जिसमें खट्टे की बहार ।।
मेरा चूरन जो कोई खाय। मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय ।।
हिन्दू चूरन इसका नाम। बिलायत पूरन इसका काम ।।
चूरन जब से हिन्द में आया। इसका धन-बल सभी घटाया ।।
चूरन ऐसा हट्ट-कट्टा। कीना दाँत सभी का खट्टा ।।
चूरन चला दाल की मण्डी। इसको खाएगी सब रण्डी ।।
चूरन अमले[10] सब जो खावैं। दूनी रिश्वत तुरंत खाते ।।
चूरन नाटक वाले खाते। इसकी नकल पचाकर लाते ।।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हज़म कर जाते ।।
चूरन खाते लाला लोग। जिसको अकिल अजीरन रोग।
चूरन खावैं एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।
चूरन साहब लोग जो खाता। सारा हिन्द हज़म कर जाता ।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हज़म कर जाते ।।
ले चूरन का ढेर, बेचा टके सेर ।।

मछली वालीः मछरी ले, मछरी !
मछरिया एक टके कै बिकाय। लाख टका कै बाला (कुंवारा) जौबन, गाहक सब ललचाय ।। नैन-मछरिया रूप-जाल से, देखत ही फंसी जाय ।। बिनु पानी मत्छरी सो बिरहिया, मिलै बिना अकुलाय ।।

जातलाला (ब्राह्मण): जात लें जात, टके सेर जात। एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायें और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके सेर के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीच को भी पितामाह बनावें। वेद धर्म्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर। ले टके सेर।

बनियाः आटा दाल, लकड़ी, नमक, घी, चीनी, मसाला, चावल ले टके सेर।

[बाबाजी का चेला गोबरधनदास आता है और सब बेचनेवालों की आवाज़
सुन-सुनकर खाने के आनन्द में बड़ा प्रसन्न होता है]

गोबरधनदासः क्यों भाई बनिये, आटा कितने सेर ?

बनियाः टके सेर।

गोबरधनदासः और चावल ?

---

[7] फूट और बेरः फल विशेष – व्यंगार्थः आपसी फूट और वैर भाव
[8] दुबला-पतला
[9] बहादुर, बलवान
[10] कचहरी के कारिन्दे

बनियाः टके सेर ।

गोबरधनदासः औ चीनी ?

बनियाः टके सेर ।

गोबरधनदासः औ घी ?

बनियाः टके सेर ।

गोबरधनदासः सब टके सेर ! सचमुच !

बनियाः हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूँगा ?

गोबरधनदासः (कुंजड़िन के पास जाकर) क्यों भाई, भाजी क्या भाव ?

कुंजड़िनः बाबाजी, टके सेर । निनुआ, धनियाँ, मिरचा, साग, सब टके सेर ।

गोबरधनदासः सब भाजी टके सेर ! वाह वाह ! बड़ा आनंद है ! यहाँ सभी चीज़ टके सेर । (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई ! मिठाई कितने सेर ?

हलवाईः बाबाजी ! लड्डुआ, जलेबी, गुलाबजामुन, खाजा, सब टके सेर ।

गोबरधनदासः वाह ! वाह !! बड़ा आनन्द है । क्यों बच्चा, मसखरी तो नहीं करता ? सचमुच सब टके सेर ?

हलवाईः हाँ बाबाजी, सचमुच सब टके सेर । इस नगरी की चाल ही यही है । यहाँ सब चीज़ टके सेर बिकती है ।

गोबरधनदासः क्यों बच्चा ! इस नगरी का नाम क्या है ?

हलवाईः अन्धेर नगरी ।

गोबरधनदासः और राजा का क्या नाम है ?

हलवाईः चौपट्ट राजा ।

गोबरधनदासः वाह ! वाह ! अन्धेर नगरी चौपट्ट राजा, टका सेर खाजा ।

हलवाईः लो बाबाजी, कुछ लेना-देना हो तो लो-दो।

गोबरधनदासः बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु-चेले सब आनन्द पूर्वक इतने में छक जाएँगे ।

(हलवाई मिठाई तौलता है – बाबाजी मिठाई लेकर खाते हुए और अन्धेर नगरी गाते हुए जाते है) यवनिका गिरती है

तीसरा अंक

स्थानः जंगल

(महन्तजी और नारायणदास एक ओर से 'राम भजो' इत्यादि गाते हुए, आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास 'अन्धेर नगरी' गाते हुए आते हैं)

महन्तः बच्चा गोबरधनदास ! कह, क्या भिक्षा लाया ? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है ।

गोबरधनदासः बाबाजी महाराज ! बड़े माल लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई है ।

महन्तः देखूँ बच्चा ! (मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है) वाह ! वाह ! बच्चा ! इतनी मिठाई कहाँ से लाया ? किस धर्मात्मा से भेंट हुई ?

गोबरधनदासः गुरुजी महाराज ! सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है ।

महन्तः बच्चा ! नारायणदास ने मुझसे बताया था कि यहाँ सब चीज़ टके सेर मिलती है तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया । बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही खाजा है ?

गोबरधनदासः अन्धेर नगरी चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा ।

महन्तः तो बच्चा ! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा है ।

दोहा

सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास । ऐसे देस कुदेस में, कबहूँ न कीजै बास ।।
कोकिल वायस एक सम, पण्डित मूरख एक । इन्द्रयान दाड़िम विषम, जहाँ न नेकु बिवेक ।।
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय । रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय ।।

सो बच्चा, चलो यहाँ से। ऐसी अन्धेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ़्त की मिले तो किस काम की ? यहाँ एक छन नहीं रहना।

गोबरधनदासः गुरुजी, ऐसा तो संसार-भर में कोई देस ही नहीं है। दो पैसा पास रहने ही से मज़े में पेट भरता है। मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन-भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। किसी-किसी दिन उपास करना पड़ता है। सो मैं तो यहीं रहूँगा।

महन्तः देख बच्चा, पीछे पछताएगा।

गोबरधनदासः आपकी कृपा से कोई दुख न होगा। मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

महन्तः मैं तो इस नगरी में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा। देख मेरी बात मान, नहीं पीछे पछतायेगा। मैं तो जाता हूँ। पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो हमारा स्मरण करना।

गोबरधनदासः प्रणाम गुरुजी, मैं आपका नित्य ही करूँगा। मैं तो फिर भी कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

(महन्तजी नारायणदास के पास जाते हैं, गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है)

यवनिका गिरती है।

चौथा अंक

स्थानः राजसभा

(राजा, मन्त्री और नौकर लोग यथास्थान स्थित हैं)

एक सेवकः (चिल्लाकर) पान खाइए, महाराज।

राजाः (पीनक से, चौंक के घबड़ाकर उठता है) क्या कहा ? सुपनखा आई ए महाराज। (भागता है)

मन्त्रीः (राजा का हाथ पकड़कर) नहीं-नहीं, यह कहता है कि जान खाइए महाराज।

राजाः दुष्ट, लुच्चा, पाजी। नाहक[11] हमको डरा किया। मन्त्री, इसको सौ कौड़े लगें।

मन्त्रीः महाराज ! इसका क्या दोष है ? न तो तमोली पान लगाकर देता, न यह पुकरता।

राजाः अच्छा, तमोली को दो सौ कोड़े लगें।

मन्त्रीः पर महाराज, आप पान खाइए सुनकर थोड़े ही डरे हैं, आप तो सुपनखा के नाम से डरे हैं, सुपनखा की सज़ा हो।

राजाः (घबड़ाकर) फिर वही नाम ? मन्त्री तुम बड़े ख़राब आदमी हो। हम रानी से कह देंगे कि मन्त्री बेर-बेर[12] तुमको बुलाने चाहता है। नौकर ! शराब ...

दूसरा सेवकः (एक सुराही में से एक गिलास में शराब उझलकर देता है) लिजिए महाराज। पीजिए महाराज।

राजाः (मुँह बना-बनाकर पीता है) और दे।

(नेपथ्य में -- 'दुहाई है दुहाई' का शब्द होता है)

कौन चिल्लाता है ? पकड़ लाओ।

(दो नौकर एक फर्यादी को पकड़ लाते हैं)

फर्यादीः दोहाई है महाराज, दोहाई है।

राजाः चुप रहो। तुम्हारा न्याव यहाँ ऐसा होगा कि जैसा जम[13] के यहाँ भी न होगा। बोलो क्या हुआ ?

फर्यादीः महाराज ! कल्लू बनिया की दीवार गिर पड़ी सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गयी। दोहाई है महाराज, न्याव हो।

राजाः (नौकर से) कल्लू बनिये की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

मन्त्रीः महाराज, दीवार नहीं लायी जा सकती।

राजाः अच्छा, उसका भाई, लड़का, आशना जो हो उसको पकड़ लाओ।

मन्त्रीः महाराज ! दीवार ईंट-चूने की होती है, उसको भाई-पेटा नहीं होता।

---

[11] अकरण

[12] बार-बार

[13] यमराज

राजाः अच्छा, कल्लू बनिये को पकड़ लाओ। (नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं) क्यों वे बनिये ! इसकी लरकी, नहीं बरकी, क्यों दबकर मर गयी ?

मन्त्रीः बरकी नहीं महाराज, बकरी।

राजाः हाँ-हाँ, बकरी क्यों मर गयी। बोल, नहीं आभी फांसी देता हूँ।

कल्लूः महाराज ! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनायी कि गिर पड़ी।

राजाः अच्छा, इस मल्लू को तोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ। (कल्लू जाता है, लोग कारीगर लाते हैं) इसकी बकरी किस तरह मर गयी ?

काकीगरः महाराज, मेरा कुछ क़सूर नहीं, चूनेवाले ने ऐसा बोदा चूना बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजाः अच्छा, इस कारीगर को बुलाओ, नहीं-नहीं निकालो, उस चूनेवाले को बुलाओ। (कारीगर निकाला जाता है, चूनेवाले पड़कर लाया जाता है) क्यों बे खैर-सोपाड़ी-चूनेवाले ! इसकी कुबरी कैसे मर गयी ?

चूनेवालाः महाराज ! मेरा कुछ दोष नहीं, भिश्ती ने चूने में पानी ढेर दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया होगा।

राजाः अच्छा, चुन्नीलाल को निकालो, भिश्ती को पकड़ो। (चूनेवाला निकाला जाता है, भिश्ती लाया जाता है) क्यों वे भिश्ती ! गंगा-जमुना की किश्ती ! इतना पानी क्यों दिया कि इसकी बकरी गिर पड़ी और दीवार दब गयी ?

भिश्तीः महाराज ! गुलाम का कोई क़सूर नहीं, क़स्साई ने मसक इतनी बड़ी बना कि उसमें पानी जादे आ गया।

राजाः अच्छा, क़साई को लाओ, भिश्ती निकालो। (लोग भिश्ती को निकालते हैं, क़साई को लाते हैं) क्यों वे क़स्साई, मशक ऐसी क्यों बनाई कि दीवार लगायी बकरी दबायी ?

क़स्साईः महाराज ! गंड़ेरिये ने टके पर ऐसी भड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मशक बड़ी बन गयी।

राजाः अच्छा, क़साई को लिकालो, गंड़ेरीये को लाओ ! (क़साई निकाला जाता है, गंड़ेरिया आता है) क्यों वे ऊख पौंडा के गंड़ेरीये ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेचा कि बकरी मर गयी ?

गंड़ेरीयाः महाराज ! उधर से कोतवाल साहब की सवारी आ गयी, सो उसके देखने में मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख़्याल नहीं किया, मेरा कुछ क़सूर नहीं।

राजाः अच्छा, इसको निकालो, कोतवाल को सरबमुहर[14] पकड़ लाओ। (गंड़ेरिया निकाला जाता है, कोतवाल पकड़ा आता है) क्यों वे कोतवाल ! तैंने सवारी ऐसी धूम से क्यों निकालो कि गंड़ेरिये ने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेची, जिससे बकरी गिरकर कल्लू बनियाँ दब गया ?

कोतवालः महाराज महाराज ! मैंने तो कोई क़सूर नहीं, मैं तो शहर के इन्तज़ाम के वास्ते जाता था।

मन्त्रीः (आप से आप) यह तो बड़ा ग़ज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे। (कोतवाल से) यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाला ?

राजाः हाँ-हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाला कि उसकी बकरी दबी ?

कोतवालः महाराज महाराज...

राजाः कुछ नहीं, महाराज महाराज, ले जाओ कोतवाल को आभी फाँसी दो। दरबार बरखास्त।

(लोग एक तरफ़ कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं,
दूसरी ओर से मन्त्री को पकड़कर राजा जाते हैं)

(यवनिका गिरती है)

---

[14] तुरन्त

पाँचवाँ अंक

स्थानः अरण्य

(गोबरधनदास गाते हुए हैं)

(राग काफी)

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा ।।
नीच उँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पण्डित तैसे ।।
कुल - मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग लुगाई ।।
जात - पांत पूछै नहीं कोई। हरि को भजै सो हरि का समाजा ।।
बेश्या जोरू एक समाना। बकरी गऊ एक करि जाया ।।
साँचे मारे मारे डोलें। छली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलैं ।।
प्रगट सभ्य अन्तर छलधारी। सोई राजसभी बल भारी ।।
सांच कहैं ते पनही[15] खावैं। झूठे बहु बिधी पदबी पावैं ।।
छलियन के एका के आगे। लाख कहो एकहु नहीं लागे ।।
भीतर होई मलिन[16] की कारो। चहिए बाहर रंग चटकारो ।।
धर्म अधर्म एक दरसाई। राजा करे सो न्याव सदाई ।।
भीतर सवाहा बाहर सादे[17]। राज करहिं अगले अरु प्यादे ।।
अन्धाधुन्ध मच्यों सब देसा। मानहुँ राजा रहत विदेसा ।।
गो द्वज श्रुति आदर नहीं होई। मानहुँ ब्रह्म - ज्ञान बस्तारा[18] ।।
अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा ।।

(बैठकर मिठाई खाता है)

गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना केया था। माना कि देस बुरा है, पर अपना क्या ? अपने किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज़ मिठाई चाभना[19], मज़े में आनन्द रामभजन करना।

(मिठाई खाता है। चार प्यादे[20] चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

पहला प्यादाः चल बे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है। आज पूरी हो गयी।

दूसरा प्यादाः बाबाजी चलिये, नमोरायन कीजिए।

गोबरधनदासः (घबड़ाकर) हैं ! यह आफ़त कहाँ से आयी ! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या क्या बिगाड़ा जो मुझको पकड़ते हो?

पहला प्यादाः आपने बिगाड़ा है या बनाया है इससे क्या मतलब अब चलिए। फाँसी चढ़िए।

गोबरधनदासः फाँसी ! अरे बाप रे बाप फाँसी ! मैंने किसकी जमा[21] लूटी कि मुझको फाँसी ! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझको फाँसी !

दूसरा प्यादाः आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।

गोबरधनदासः मोटे होने से फाँसी ? यह कहाँ का न्याय है ! अरे, हँसी फकीरों से नहीं करनी होती।

पहला प्यादाः जब सूली चढ़ लीजिऐगा तब मालूम होगा कि हँसी है कि सच। सीधी राह से चलते हो घसीटकर ले चलें ?

गोबरधनदासः अरे बाबा, क्यों बेक़सूर का प्राण मारते हो ? भागवान के याहाँ क्या जवाब दोगे ?

---

[15] जूता

[16] मैला

[17] भीतर से काले, ऊपर से निर्मल। धूर्त

[18] जैसे ब्रह्म-ज्ञानी हो जो ऊँच-नीच को समान भाव से देखते हैं।

[19] व्यंग्य भाव है।

[20] प्यादा = fantassin

[21] कोष, खजाना

पहला प्यादाः भगवान को जवाब राजा देगा। हमको क्या मतलब। हम तो हुक्मी बंदे[22] हैं।

गोबरधनदासः तब भी बाबा बात क्या है कि हम फ़क़ीर आदमी को नाहक फाँसी देते हो ?

पहला प्यादाः बात यह है कि कोतवाल फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उसको ले गये, तो फाँसी का फन्दा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज़ किया। इस पर हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपाराध में किसी न किसी को सज़ा होनी ज़रूर है, नहीं तो न्याव न होगा। इसी वास्ते तुमको ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

गोबरधनदासः तो क्या और कोई मोटा आदमी इस नगर भर में नहीं मिलता जो मुझ अनाथ फ़क़ीर को फाँसी देते हैं ?

पहला प्यादाः इसमें दो बात हैं। एक तो नगर भर में राजा के न्याव डर से कोई मुटाना नहीं, दूसरे और किसी को पकड़े तो वह न-जाने क्या बात बनाये कि हम लोगों के सिर कहाँ न घहराय और फिर इस राज में साधू-महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इससे तुम्हीं को फाँसी देंगे।

गोबरधनदासः दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे याहाँ बड़ा हो अँधेर है, अरे गुरुजी महाराज का कहा मैंने न माना उसका फल मुझको भोगना पड़ा। गुरुजी कहाँ हो ! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हुँ। गुरुजी गुरुजी ...

(गोबरधनदास चिल्लाता है, प्यादे उसको पकड़कर ले जाते हैं)

(यवनिका गिरती है)

छठा अंक

स्थानः श्मशान

(गोबरधनदास को पकड़े हुए चार सिपाहियों का प्रनेश)

गोबरधनदासः हाय बाप रे ! मुझे बेक़सूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाइयो, कुछ तो धरम विचारो ! अरे मुझ ग़रीब को फाँसी को क्या लाभ होगा ? अरे मुझे छोड़ दो ! हाय ! हाय ! (रोता है और छुड़ाने का यत्न करता है)

पहला सिपाहीः अवे, चुप रह, राजा का हुक्म भला टल सकता है ? यह तेरा आखरी दम है, राम का नाम ले। बेफ़ाइदा क्यों शोर करता है ? चुप रह।

गोबरधनदासः हाय ! मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी ने कहा था कि ऐसे नगर में न रहना चाहिए, यह मैंने न सुना ! अरे ! इस नगर का नाम ही अँधेर नगरी और राजा का नाम चौपट्ट है, तब बचने की कौन आशा है। अरे ! इस नगरी में ऐसा कोइ धर्मात्मा नहीं है जो इस फ़कीर को बचाने। गुरुजी कहाँ हो ? बचाओ - बचाओ - गुरुजी - गुरुजी !

(रोता है, सिपाही लोग उसे घसीटते हुए ले चलते हैं। गुरुजी और नारायणदास आते हैं)

गुरुः अरे बच्चा गोबरधनदास ! तेरी यह क्या दशा है ?

गोबरधनदासः (गुरु को हाथ जोड़कर) गुरुजी ! दीवार के नीचे बकरी दब गयी, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं, गुरुजी बचाओ।

गुरुः अरे बच्चा ! मैंने तो पहिले तो कहा कि ऐसे नगर में रहना ठीक नहीं। तैंने मेरा कहना नहीं सुना।

गोबरधनदासः मैंने आपका कहा नहीं माना, उसी का यह फल मिला। आपके सिवा अब ऐसा कोई नहीं है जो रक्षा करे। आप ही का हूँ, आपके सिवा और कोई नहीं। (पैर पकड़कर रोता है)

गुरुः कोई चिंता नहीं, नारायण समर्थ है। (भौं चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझको अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो, तुम लोग तनिक किनारे हो जाओ, देखो मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाहीः नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश कीजिए।

---

[22] हुक्म बजानेवाले

(सिपाही हट जाते हैं। गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं)

गोबरधनदासः (प्रगट) तब तो गुरुजी हम फाँसी चढ़ेगे।

गुरुः नहीं बच्चा, मुझको चढ़ने दो।

गोबरधनदासः नहीं गुरुजी, हम फाँसि पड़ेंगे।

गुरुः नहीं बच्चा हम। इतना समझाया नहीं मानता, हम बूढ़े भये, हमको जाने दे।

गोबरधनदासः स्वर्ग जाने बूढ़ा जवाब क्या ? आप तो सिद्ध आपको गति-अगति से क्या ? मैं फाँसी चढूँगा।

(इसी प्रकार दोनें हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं)

पहला सिपाहीः भाई ! यह क्या माजरा है, कुछ समझ नहीं पड़ता।

दूसरा सिपाहीः हम भी नहीं समझ सकते हैं कि यह कैसा गबड़ा[23] है।

(राजा, मंत्री, कोतवाल आते हैं)

राजाः यह क्या गोलमाल है ?

पहला सिपाहीः महाराज ! चेला कहता है मैं फाँसी पड़ूँगा, गुरु कहता है, मैं पड़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है।

राजाः (गुरु से) बाबाजी ! बोलो। काहे को आप फाँसी चढ़ते हैं ?

गुरुः राजा ! इस समय ऐसी साईत है कि जो मरेगा, सिधा बेकुण्ठ जायेगा।

मंत्रीः तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गोबरधनदासः हम हम। हम को हुक्म है।

कोतवालः हम लटकेंगे। हमारे सक्षम तो दीवार गिरी।

राजाः चुप रहो, सब लोग। राजा की आछत[24] कौन बेकुण्ठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी।

गुरुः

जहाँ न धर्म न बुद्धि नहीं नीति न मुजन समाज।
ते ऐसहि आपुहि नसै, जैसे चौपट राज।।

(राजा को लोग टिकठी पर खड़ा करते हैं)

(पटाक्षेप)

Questions : 1. Quels sont les lieux de l'action ?
2 Quels sont les moments de l'action ?
3. Classez les produits dont on fait l'article au marché.
4 Quels sont les vendeurs atypiques, et pourquoi ?
5. Traduisez les phrases soulignées.

Notez tous les mots que vous ne connaissiez pas, et toutes les constructions que vous ne compreniez pas
Commencer à (re)lire le Ramayana ou au moins ses extraits les plus significatifs.
Apprendre l'acte 1 (sauf les chants : « *sab* »)

[23] धन्ध

[24] जीवित रहने